॥ श्री ॥

मौन एकादशी विधि

गुणना तथा

अष्टप्रकारी पूजा।

अर्थ सहित



○ प्रकाशक ○

स्वर्गीय श्रीयुत बाबू कन्हैयालालजी पदेर
के पुत्र रूपचन्द पदेर ने लोकोप
कारार्थ प्रकाश किया।



कलकत्ता।

नरसिंह प्रेसमें, सागरचन्द स्वर्णाणी
द्वारा मुद्रित।

सं० १९२६

मूल्य] [सदुपयोग।

वक्तव्य ।

स्वधर्मि भ्राताओंकी सुविधा के लिये यह एक छोटीसी पुस्तक प्रकाशित की जाती है कारण मौन एकादशी पर्व का विधि विधान रत्नसागर रत्नसमुच्चयादि पुस्तकोंमें समुचित रूप सम्बावद्ध न लिखा होनेसे स्त्री पुरुषो को यह क्रिया करनेमे अत्यन्त असुविधा होती थी कारण पुस्तकें वहोत वडी और वह भी अब अलभ्य हो गयीं इस कारण जैन बन्धुओको और भी कठिनता का सामना करना पड़ा अब इस पुस्तकमें विस्ताररूपसे श्रृङ्खलावद्ध मागशिर शुक्ला ११ अर्थात् मौन एकादशीपर्व का कृत्य लिखा गया है क्योकि सिद्धान्तोमें इस पर्वकी महिमा विस्ताररूपसे लिखी हुई है एक सुव्रत नामके सेठ जोके २२ वे तीर्थङ्कर श्री नेमिनाथ भगवानके समयमें हुए है वह बड़ेही योग्य और पवित्रात्मा पुरुष थे उन्होने एक समय मि० मार्गशिर कृष्णा ११ को अष्ट प्रहरका पौषध व्रत लिया था उस व्रतमें उन्होने चारों

प्रकारके आहारका त्याग कर दिया और कहीं भी स्वस्थान छोडकर आना जाना भी बन्द कर दिया ऐसा नियम करके वह सेठ सुव्रत अपने गृहमें विराजमान थे तस्करो (चोरो) को भी यह वार्ता किसी प्रकार मालूम होगयी और चोरोने भी समय पाकर उनके घरमें ढूंढ़ ढूढ़ कर माल सब उठाकर गठडी बाँधकर ले जानेके लिये तयार हुए उस समय धर्मकी रक्षक शासन देवी प्रगट हुई और उनको वह माल ले जानेसे रोक दिया प्रात काल होतेही लोगोने देखा के चोर माल उठाकर गठड़ी बाँधे खडे है यह खबर राजा तक पहुंचो उन्हों ने आकर देखा राजाने राज्यनीतिके विरुद्ध कार्य देख चोरोको प्राणदण्ड की आज्ञा दी यह बात सुन सेठको अत्यन्त दु ख हुआ अपना नियम पूर्णकर सुव्रत सेठ शीघ्रही राजा के पास पहुंचे और क्षमा करा दिया कारण इनको प्राणदण्ड होनेपर मेरी धर्मदयालुता नष्ट हो जायेगी ऐसे व्रतधारी दृढो त्रि-

स्वासी वह सेठ सुव्रत हो गये हैं और भी इस विषयपर कई एक दृष्टान्त हैं एकदाकाल उसी नगरमें अग्नि लग गयी थी सेठ पोषधका नियमकर घरमें बैठे थे केवल सेठकी दुकान तथा घर छोड़ बाकी समस्त नगर जलकर भस्म हो गया यह धर्मात्मा पुरुषोंका ही प्रभाव है इसी उपरोक्त सेठके अनुकूल जो भी स्त्री पुरुष पोषध व्रतधर्म ध्यान करेंगे तो वह सदाकाल सुखकी प्राप्ती करेंगे इस क्रिया को पूर्णतया निर्वाह करनेके लिये ही यह पुस्तक श्री गुरुजी महाराज श्री १०८ श्री सूर्यमलजी यति ने अति परिश्रम द्वारा सशोधन करके मुझे अनुगृहित किया जिसके लिये मैं महाराजका अति आभारी हू आशा है कि जैनवन्धुवर्ग इस पुस्तकसे धार्मिक लाभ उठाकर मुझे अनुगृहित करेंगे इत्यलम्।

आपका कृपाभिलाषी—

रूपचंद वडेर।

॥*॥ अरिहंतके १२ गुणाः ॥*॥



१ ॥ अशोक वृक्ष प्राति हाय सयुक्ताय श्री अरिहंताय नम ॥

२ ॥ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरि०॥

३ ॥ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरि०॥

४ ॥ चामरयुग प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरि०॥

५ ॥ स्वर्ण सिंहासण प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरि०॥

६ ॥ भामडल प्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरि०॥

७ ॥ दुंदुभिप्रातिहार्य संयुक्ताय श्री अरि०॥

८ ॥ छत्रत्रय प्रातिहार्य सयुक्ताय श्री अरि०॥
९ ॥ ज्ञानातिशय सयुक्ताय श्री अरि ० ॥
१० ॥ पूजातिशय सयुक्ताय श्री अरि ० ॥
११ ॥ वचनातिशय सयुक्ताय श्री अरि ० ॥
१२ ॥ अपाया पगमातिशय सयुक्ताय श्री अरि ० ॥

॥ अथ एकादशीनु चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ श्रीमल्लि त्रिभुवन धणी । जन्म दीक्षाने ज्ञान कल्याणकएकादशी । मग सर सुदि मन आण ॥१॥ अर पारस दीक्षाग्रही । एकादशी दिन जाण । रिषभ अजित सुमति नमि पाम्यो केवलज्ञान ॥ २ ॥ पद्मप्रभु सिवपुर लह्यो । एकादशी अतिरूडी । इग्यारे अग आराधता ए तिथी नहीं कूडी ॥ ३ ॥ इग्यारे गणधर थया ।

द्वादशअंगरचनार। कृपा चंद्रसूरि सेवतां। पामे भवनो पार ॥ ४ ॥

॥ अथ एकादशीनुवृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ ® ॥ समवसरण बैठा भगवत। धरम प्रकासै श्री अरिहत। बारे परषदा बैठी जुडी। मिगसर सुदि इग्यारस वड़ी ॥ १ ॥ मल्लिनाथ ना तीन कल्याण। जनम दिक्षानें केवल ग्यान। अरि दीक्षा लीधी रुवड़ी ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिनें उपनो केवल ग्यान। पाच कल्याणक अति पर धान। ए तिथिनी महिमा ए वड़ी ॥ मि० ॥ ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इम हिज। पांच कल्याणक हुवे तिम हीज। पचासनी संख्या परगड़ी ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागति गिणतां एम। डेढसै कल्याणक थायें तेम।

कुण तिथछे एतिथ जे वड़ी ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनंत चौवीसो इण परि गिणो । लाभ अनत उपवासा तणो । ए तिथि म्हु तिथि सिर राखड़ी ॥ मि० ॥ ६ ॥ मौन पणें रह्या श्री मल्लिनाथ । एक दिवस सयम व्रत साथ । मौनतणी परि व्रत इम पड़ी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठपहरी पोसो लीजीये । चौविआहार विधिसु कीजि ये । पिण परमादन कीजे घड़ी ॥ मि० ॥ ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजै उपवास । जावजीव पिण अधिक उल्हास । ए तिथ मोच तणी पावड़ी ॥ मि० ॥ ६ ॥ उजमणो कीजै श्रीकार । ग्यानना उप गरण इग्यार २ ॥ करो काउसग्ग गुरुपाये पडी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करी जै वली । पोथी पूजी जै मनरली । मुगति पुरी कीजै ढूकड़ी ॥ मि० ॥ ११ ॥ मोन इग्यारस मोटो पर्व । आराध्या सुखलहियें सर्व । व्रत

पच्चखाण करो आखड़ी ॥ मि० ॥ १२ ॥
जेसल सोल इक्यासी समें । कीधो तवन सहू
मन गमें । समय सुंदर कहे करो व्याहडी
॥ मि० ॥ १३ ॥ ॥ ॥ इति श्री एकादसी
वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥ ११ ॥ ॥

॥ अथ श्री इग्यारस स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेसर दीक्षा नमिजिन ज्ञान ॥ श्रीमल्लि जनम व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार ॥ ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुण धार ॥ इग्यारे वारे प्रतिमा देशक धार ॥ इग्यारे दुगणा दोय अधिक जिन राय ॥ मन सूधे सेव्यां सब संकट मिटजाय ॥ २ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास ॥

वलि गुणनो गुणिये विधिसेती सुविलास ॥ जिनआगमवाणी जाणो जगत प्रधान ॥ एक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भुवणवण सम्यगदरशन वत ॥ जिनचक्र सुसेवक वेयावच्च करत ॥ श्रीसंघ सकलमें आराधक बहु जाण ॥ जिन शासनदेवी देव करो कल्याण ॥ इति ॥ इग्यारस स्तुति ॥ ४ ॥

॥ पुन ॥

एकादसी आखि आदिदेवे । आराधिने भवि सिव शर्ण लेवे ॥ धरो ध्यान श्रीजिनराज केरो । टले अनादि कालनो कम हेरो ॥ १ ॥ मल्लि जन्म दीक्षा केवल पहाण । अरनाथ चारित्र नमि परमनाण ॥ दश खेत्रना कल्याणक एम जाणो । दोढसोने वलि त्रणसो पिछाणो ॥ २ ॥ इग्यारे वरसतिममासकीजे । आराधि

अंग इग्यारह सुजस लीजे ॥ मौन मन धारी शुभ धर्मकारी । श्रुतज्ञाननी भक्ति करिये विचारी ॥ ३ ॥ अठ पोहरो पोसह करि यथा शक्तें । तप जप करी उजमणो सुभक्तें ॥ इक चित ध्यावें सुयदेवि पसायें । श्री जिनकृपाचन्द्र सूरि सदासुख थायें ॥ ४ ॥

॥ पुन ॥

॥ ७ ॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपते र्ज्ञान मतुलं । तथा मल्लि र्जन्म व्रत मपमल केवलमल । वलत्ते कादश्यां सहसिलस दुद्दाम महसि ॥ चितौ कल्याणानां चपतु विपद. पचक मद' ॥ १ ॥ सुपर्वेद्र श्रेण्या गमन गमनै भूमिवलय । सदा स्वर्गत्यैत्रा हमहमकया यत्र सलय । जिना नामप्यापु क्षण मति सुख नारक सदः ॥ (चितौ०) ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजग दुरात्मीय समये । फलं यत्कर्त्तृणा मितिच

विदित सुख्समये । अनिष्टा रिष्टाना चिति
रनुभवेषु वेहुमुद ॥ (चितौ०) ॥ ३ ॥ सुरास्सँ
द्रा स्सर्वे सकल जिन चक्र प्रमुदिता । तथाच
ज्योतिष्का खिल भुवनना था समुदिता । तपो
यत्कर्तॄणा विदधति सुख विस्मितहृद (चितौ०)
॥ ४ ॥ ॥ ० ॥ इति मोने काढशीस्तुति ॥ ११ ॥

॥ एकादसीनी सभाय लो० ॥

वीरा म्हारा गजथकी उतरो ए देशी.

इग्यारस आराधिये । विधियुत सजमवतार,
अग इग्यारह आराधवा । ए तिथी सेवो उजम
तारे इग्या ० ॥ १ ॥ ए तिथी कर्म चय कारणी
। भाखी श्रीजिन भाणोरे, कल्याणक बहुलाथया
। ते सहु दिलमा आणोरे ॥, ॥ इग्या० ॥ २ ॥
अरनाथ दीक्षा आदरी । नमि लह्यो केवल

नाणरे । जन्म दीक्षा केवल त्रण। मल्लिजिनना कल्याणरे ॥इ०॥ ३ ॥ मगसर सुदि इग्यारसे। भरत पाचमा जाणोरे। एरवत क्षेत्रमां इमा हीज। कल्याणक पहिचानोरे ॥ इ० ॥ ४ ॥ दस क्षेत्रना पचास छे। तीन कालना गणीयेरे। दोढसो कल्याणक थया। समरण करी दुःख हरियेरे ॥ इ० ॥ ५ ॥ एटला वीजो इग्यारस। त्रणकालना जाणोरे। त्रणसो कल्याणक नमो। गुणनो करी गुण खानीरे ॥ इ० ॥ ३ ॥ अठपोहरी पोसो करी। मौन व्रत लइ भावेरे। चउविहार उपवासथी। अशुभ करमो मानि जावेरे ॥ इ० ॥ ७ ॥ सुव्रतशेठ पोसो कर्यो। मौन सहित मन रंगरे। अग्निनो उपद्रव मटयो। सुजस लह्या सुखसंगेरे ॥ ८ ॥ चोर थभाना तप थकी। अचरज थयो सउ जननेरे, राजादिके मोटो कीयो। सुव्रत सुकृत करमरे ॥ इ० ६ ॥

६ ॥ श्री देवश्रुत अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री देवश्रुत नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्री उदय नाथाय नम ॥

॥७॥ धातकीखडे पूर्वभरते अतीत २४ जिन पच कल्याणक नाम ॥७॥ ४ ॥

४ ॥ श्री अकलक सर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्री शुभकर अर्हते नम. ॥
६ ॥ श्री शुभकरनाथाय नम ॥
३ ॥ श्री शुभकर सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्रीससनाथाय नम ॥

॥ ७ ॥ धातकीखंडे पूर्वभरते वर्त्तमान २४ जिनपंच कल्याणक नाम ॥ ७ ॥ ५ ॥

२१ ॥ श्री ब्रह्मेंद्र सर्वज्ञाय नम ॥

१६ ॥ श्री गुणनाथ अर्हते नम ॥

१६ ॥ श्री गुणनाथ नाथाय नम ॥

१६ ॥ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

१८ ॥ श्री गांगिलनाथाय नम ॥

॥ ७ ॥ धातकीखंडे पूर्वभरते अनागत २४ जिन पच कल्याणक नाम ॥ ७ ॥६॥

४ ॥ श्री साप्रति सर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ अर्हते नम, ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

७ ॥ श्री विशिष्ट नाथाय नम ॥

॥ ⊛ ॥ पुष्करार्द्धपूर्वभरते अतित २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ⊛ ॥ ७ ॥

४ ॥ श्रीमृदु सर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त अर्हते नम ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त नाथाय नम ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्रीकलाशत नाथाय नम ॥

॥ ⊛ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वभरते वर्त्तमान २४ जिनपञ्चकल्याणक० ॥ ⊛ ॥ ८ ॥

२१ ॥ श्रीअरण्यवास सर्वज्ञाय नम
१६ ॥ श्री योगनाथ अर्हते नम ॥

१६ ॥ श्री योगनाथ नाथाय नम. ॥

१६ ॥ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

१८ ॥ श्री अयोग नाथाय नम ॥

॥ ० ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वभरते अनागत२४ जिन पंच कल्याणक नाम ॥ ० ॥ ६ ॥

४ ॥ श्री परमसर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति अर्हते नम. ॥

६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति नाथाय नम ॥

६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति सर्वज्ञाय नम ॥

७ ॥ श्री निष्केश नाथाय नम ॥

॥ ७ ॥ धातकीखडे पश्चिमभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम ॥७॥ १०॥

४ ॥ श्रीसर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ॥

६ ॥ श्रीहरिभद्र अर्हते नम ॥

६ ॥ श्रीहरिभद्र नाथाय नम ॥

६ ॥ श्रीहरिभद्र सर्वज्ञाय नम ॥

७ ॥ श्रीमगधाधि नाथाय नम ॥

॥ ९ ॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते वर्त्तमान २४जिन पचकल्याणक नाम ॥ ॥ ११ ॥

२१ ॥ श्रीप्रयच्छ सर्वज्ञाय नम ॥

१६ ॥ श्री अक्षोभ अर्हते नम. ॥

१६ ॥ श्री अक्षोभ नाथाय नम ॥

१६ ॥ श्री अक्षोभ सर्वज्ञाय नम ॥

१८ ॥ श्री मल्लिसिंह नाथाय नम ॥

॥ * ॥ धातकीखडे पश्चिमभरते अनागत २४ जिनपच कल्याणक ॥ * ॥ १२

२ ॥ श्री आदिकर सर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्री धनद अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री धनद नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री धनद सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्री पौषनाथाय नम ॥

॥ ७ ॥पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥७॥ १३

४ ॥ श्री प्रलवसर्वज्ञाय नम. ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्री प्रशमजित नाथाय नम. ॥

॥७॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमभरते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥७॥१४ ॥

२१ ॥ श्री स्वामी सर्वज्ञाय नम ॥
१६ ॥ श्री त्रिपरीत अर्हते नम ॥
१६ ॥ श्री त्रिपरीत नाथाय नम' ॥
१६ ॥ श्री त्रिपरीत सर्वज्ञाय नम ॥
१८ ॥ श्री प्रशाद नाथाय नम ॥

॥६॥ पुष्करार्द्ध पश्चिम भरते अनागत २४
जिन पचकल्याणक० ॥६॥ १५ ॥

४ ॥ श्री अघटित सर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्रीरिषभचन्द्र नाथाय नम ॥

॥६॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अतीत २४
जिन पंच कल्याणक० ॥६॥ १६ ॥

४ ॥ श्री दयातसर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्री अभिनदन अर्हते नम ॥

६ ॥ श्री अभिनदन नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री अभिनदन सर्वज्ञाय नम॰ ॥
७ ॥ श्री रत्नेश नाथाय नम ॥

॥॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ जिन पच कल्याणक नाम ॥॥ १७ ॥

२१ ॥ श्री शामकाष्ट सर्वज्ञाय नम
१६ ॥ श्री मरुदेव अर्हते नम ॥
१६ ॥ श्री मरुदेव नाथाय नम ॥
१६ ॥ श्री मरुदेव सर्वज्ञाय नम ॥
१८ ॥ श्री अतिपार्श्वनाथाय नम ॥

॥॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अनागत २४ जिन पच कल्याणक नाम ॥॥ १८ ॥

४ ॥ श्री नदिषेण सर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्री व्रतधर अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री व्रतधर नाथाय नम॰ ॥
६ ॥ श्री व्रतधर सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्री निर्वाण नाथाय नम ॥

॥ॐ॥ धातकीखडे पूर्वऐरवते अतीत २४ जिन पञ्च कल्याणक नाम ॥ॐ॥१९॥

४ ॥ श्री सौंदर्य सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्री नारसिंह नाथाय नम ॥

॥ ॐ ॥ धातकीखडे पूर्वऐरवते वर्त्तमान २४ जिनपंच कल्याणक नाम ॥ ॐ ॥ २०॥

२१ ॥ श्री खेमन्त सर्वज्ञाय नम. ॥
१६ ॥ श्री सतोपित अर्हते नम ॥
१६ ॥ श्री सतोपित नाथाय नम ॥
१६ ॥ श्री सतोपित सर्वज्ञाय नम ॥
१८ ॥ श्री काम नाथाय नम ॥

॥ ॐ ॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते अनागत २४ जिन पच कल्याणक नाम ॥ ॐ ॥२१॥

४ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्री चन्द्रदाह अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री चन्द्रदाह नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री चन्द्रदाह सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्री दिलादित्य नाथाय नम ॥

॥ ॐ ॥ पुष्करार्द्धपूर्वऐरवते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नाम० ॥ ॐ ॥ २२ ॥

४ ॥ श्री अष्टाहिकसर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्री वणिक अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री वणिक नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री वणिक सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्री उदयज्ञान नाथाय नम ॥

= -

॥ ८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ श्री [illegible] नम ॥
[illegible] ॥ श्री [illegible] नम ॥
[illegible] ॥ श्री [illegible] नम ॥
[illegible] ॥ श्री [illegible] नम ॥
[illegible] ॥ श्री [illegible] नम ॥

॥ ९ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वऐरवते अनागत२४ जिन पंच कल्याणक नाम ॥ ० ॥२४॥

२ ॥ श्री निर्वाण सर्वज्ञाय नम ॥
३ ॥ श्री रविराज अर्हते नम ॥
६ ॥ श्रीरविराज नाथाय नम ॥
३ ॥ श्री रविराज सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्री प्रथमनाथ नाथायनम ॥

॥ ❁ ॥ धातकीखंडे पश्चिमऐरवते अतीत २४जिन पंचकल्याणक नाम ॥ ❁ ॥ २५ ॥

४ ॥ श्री पुरुरवसर्वज्ञाय नम. ॥
३ ॥ श्री अवबोध अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री अवबोध नाथाय नम ॥
८ ॥ श्री अवबोध सर्वज्ञाय नम
७ ॥ श्री विक्रमेन्द्र नाथाय नम ॥

॥ ❁ ॥ धातकीखंडे पश्चिमऐरवते वर्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नाम ॥❁॥ २६॥

२१ ॥श्री सुशान्त सर्वज्ञाय नम ॥
१० ॥ श्री हर अर्हते नम ॥
१६ ॥ श्री हर नाथाय नम ॥
१६ ॥ श्री हर सर्वज्ञाय नम ॥
१८ ॥ श्री नन्दकेश नाथाय नम. ॥

॥६॥धातकीखंडे पश्चिमऐरवते अनागत २४जिनपंच कल्याणक नाम ॥२७॥

२ ॥ श्री महामृगेन्द्र सर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्री अशोचित अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री अशोचित नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री अशोचित सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्री धर्मेन्द्र नाथाय नम ॥

॥७॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमऐरवते अतीत २४ जिनपंच कल्याणक नाम ॥७॥ २८ ॥

२ ॥ श्री अश्ववृन्द सर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्री कुटिल अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री कुटिल नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री कुटिल सर्वज्ञाय नम ॥
७ ॥ श्री वर्द्धमान नाथाय नम ॥

※॥पुष्करार्द्ध पश्चिमऐरवते वर्त्तमान२४
जिन पचकल्याणक० ॥※॥२६॥

२१ ॥ श्री नन्दिक् वर्द्धमानाय नम ॥
१६ ॥ श्री धर्मचन्द्र अर्हते नम ॥
१६ ॥ श्री धर्मचन्द्र नाथाय नमः ॥
१६ ॥ श्री धर्मचन्द्र सर्वज्ञाय नम ॥
१६ ॥ श्री विवेक नाथाय नम. ॥

◎॥पुष्करार्द्ध पश्चिमऐरवते अनागत२४
जिन पच कल्याणक ॥◎॥३०॥

३ ॥ श्री कलाप सर्वज्ञाय नम ॥
६ ॥ श्री त्रिसोम अर्हते नम ॥
६ ॥ श्री त्रिसोम नाथाय नम ॥
६ ॥ श्री त्रिसोम सर्वज्ञाय नम ॥
५ ॥ श्री आरण्य नाथाय नम ॥

॥ इति श्री मौन एकादशी गुणनौ संपूर्णम् ॥

॥ श्री जिन कल्याणक संग्रह ॥

॥ कल्याणक को टाप और जाप ॥

तिथि ॥ कातिक वदी ॥

५ श्री संभवसर्वज्ञायनमः
१२ ,, नेमिपरमेष्ठिनेनमः
१२ ,, पद्मप्रभअर्हते नमः
१३ ,, पद्मप्रभनाथायनमः
३० ,, वीरपारगतायनमः

तिथि ॥ कातिक सुदी ॥

३ श्री सुविधि सर्वज्ञायनमः
१२ ,, अरसर्वज्ञायनमः

तिथि ॥ मार्गशीर वदी ॥

५ श्री सुविधिअर्हतेनमः
६ ,, सुविधिनाथायनमः

१० ,,	महावीरनाथायनम	चत्रीकुन्ड
११ ,,	पद्मप्रभपारगतायनम.	शिखरजी
तिथि	॥ मार्गशीरसुदी ॥	जन्मादिनगरी
१० श्री	अरनाथअर्हतेनमः	हथणापुर
१० ,,	अरनाथपारगतायनम	शिखरजी
११ ,,	अरनाथनाथायनम	हथणापुर
११ ,,	मल्लिअर्हतेनम	मिथिला
११ ,,	मल्लिनाथनाथायनम	मिथिला
११ ,,	मल्लिसर्वज्ञायनम	मिथिला
११ ,,	नमिसर्वज्ञायनम.	मिथिला
१४ ,,	सभवअर्हतेनम.	सावत्थी
१५ ,,	सभवनाथायनम	सावत्थी
तिथि	॥ पोषवदी ॥	जन्मादिनगरी
१० श्री	पार्श्वनाथअर्हतेनम	वाणारसी
११ ,,	पार्श्वनाथनाथायनम	वाणारसी
१२ ,,	चद्रप्रभअर्हतेनम	चन्द्रावती

१३ ,, चद्रप्रभनाथायनम	चन्द्रावती
१४ ,, शीतलसर्वज्ञायनम	भद्दिलपुर
तिथि ॥ पोषसुदी ॥	जन्मादिनगरी
६ श्री विमलसर्वज्ञायनम	कम्पिलपुर
९ ,, शातिसर्वज्ञायनम	हथणापुर
११ ,, अजितसर्वज्ञायनम	अयोध्या
१४ ,, अभिनदनसर्वज्ञायनम	अयोध्या
१५ ,, धर्म्मसर्वज्ञायनम	रत्नपुरी
तिथि ॥ माघवदी ॥	जन्मादिनगरी
६ श्री पद्मप्रभपरमेष्ठिनेनम	कोशबी
१२ ,, शीतलअर्हतेनम	भद्दिलपुर
१२ ,, शीतलनाथनाथायनम	भद्दिलपुर
१३ ,, ऋषभपारगतायनम	अष्टापद
३० ,, श्रेयाससर्वज्ञायनम	सिहपुर
तिथि ॥ माघसुदी ॥	जन्मादिनगरी
२ श्री अभिनदनअर्हतेनम	अयोध्या

२	,, वासुपूज्यसर्वज्ञायनम	चम्पापुर
३	,, विमलअर्हतेनम	कम्पिलपुर
३	,, धर्म्मअर्हतेनम	रत्नपुरी
४	,, विमलनाथायनम	कम्पिलपुर
८	,, अजितअर्हतेनमः	अयोध्या
६	,, अजितनाथायनम	अयोध्या
१२	,, अभिनंदननाथायनम	अयोध्या
१३	,, धर्म्मनाथायनम.	रत्नपुरी
तिथि	॥ फाल्गुणवदी ॥	जन्मादिनगरी
६	श्री सुपार्श्वसर्वज्ञायनम	बनारस
७	,, सुपार्श्व पारगतायनम	शिखरजी
७	,, चन्द्रप्रभसर्वज्ञायनम	चन्द्रावती
६	,, सुविधिपरमेष्ठिनेनम	काकन्दी
११	,, ऋषभसर्वज्ञायनम.	पुरिमताल
१२	,, श्रेयासअर्हतेनम	सिंहपुर
१२	श्री मुनिसुव्रतसर्वज्ञायनम.	राजगृही

१३	,, श्रेयांसनाथायनम	सिंहपुर
१४	,, वासुपूज्यअर्हतेनम	चम्पापुर
३०	,, वासुपूज्य नाथायनम	चम्पापुर
तिथि	॥ फाल्गुणसुदी ॥	जन्मादिनगरी
२	श्री अरपरमेष्ठिनेनम	हस्तणापुर
४	,, मल्लिपरमेष्ठिनेनम	मिथिला
८	,, रुभवपरमेष्ठिनेनम	सावस्थी
१२	,, मल्लिपारगतायनम	शिखरजी
१२	,, मुनिसुव्रतनाथायनम	राजगृही
तिथि	॥ चैत्रवदी ॥	जन्मादिनगरी
४	श्री सुपार्श्वपरमेष्ठिनेनम	वाणारसी
४	,, पार्श्वसर्वज्ञायनम	वाणारसी
५	,, चन्द्रप्रभपरमेष्ठिनेनम	चन्द्रावती
८	,, ऋषभअर्हतेनम	अयोध्या
८	,, ऋषभनाथायनम	अयोध्या

तिथि	॥ चैत्रसुदी ॥	जन्मादिनगरी
३	श्री कुंथुसर्वज्ञायनम	हथणापुर
५	,, अजितपारगतायनम	शिखरजी
५	,, संभवपारगतायनम.	शिखरजी
५	,, अनतपारगतायनम'	शिखरजी
६	,, सुमतिपारगतायनम	शिखरजी
११	,, सुमतिसर्वज्ञायनम	अयोध्या
१३	,, महावीरअर्हतेनमः	क्षत्रीकुन्ड
१५	,, पद्मप्रभसर्वज्ञायनम	कौशम्बी

तिथि	॥ वैशाखवदी ॥	जन्मादिनगरी
१	श्री कुंथुपारगतायनम'	शिखरजी
२	,, शीतलपारगतायनम	शिखरजी
५	,, कुंथुनाथायनम.	हथणापुर
६	,, शीतलपरमेष्ठिनेनम'	भद्दिलपुर
१०	,, नमिपारगतायनम	शिखरजी
१३	,, अनंतअर्हतेनम	अयोध्या

१४ ,, अनतनाथायनम		अयोध्या
१४ ,, अनतसर्वज्ञायनम		अयोध्या
१४ ,, कुंथुनाथअर्हतेनम		हथणापुर
तिथि	॥ वैशाखसुदी ॥	जन्मादिनगरी
४ श्री अभिनदनपरमेष्ठिनेनम		अयोध्या
७ ,, धर्म्मपरमेष्ठिनेनम		रत्नपुरी
८ ,, अभिनदनपारगतायनम		शिखरजी
८ ,, सुमतिअर्हतेनम		अयोध्या
६ ,, सुमतिनाथायनम		अयोध्या
१० ,, महावीरसर्वज्ञायनम		बराकड
११ ,, कुंथुपारगतायनम		शिखरजी
१२ ,, विमलपरमेष्ठिनेनम		कम्पिला
१३ ,, अजितपरमेष्ठिनेनम		अयोध्या
तिथि	॥ जेष्टवदी ॥	जन्मादिनगरी
६ श्री श्रेयासपरमेष्ठिनेनम		सिहपुर
८ ,, मुनिसुव्रतअर्हतेनम		राजग्रही

११	,, मुनिसुव्रतपारगतायनम	शिखरजी
१२	,, शांतिअर्हतेनम	हथणापुर
१३	,, शांतिपारंगतायनमः	शिखरजी
१४	,, शांतिनाथायनम	हथणापुर
तिथि	॥ जेष्ठसुदी ॥	जन्मादिनगरी
२	श्री सुपार्श्वपरमेष्टिनेनमः	वाणारसी
५	,, धर्म्मपारंगतायनम	शिखरजी
६	,, वासुपूज्यपरमेष्ठिनेनम	चम्पापुर
१२	,, सुपार्श्वअर्हतेनम.	वाणारसी
१३	,, सुपार्श्वनाथायनम	वाणारसी
तिथि	॥ अपाढ़वदी ॥	जन्मादिनगरी
४	श्री ऋषभपरमेष्ठिनेनम.	अयोध्या
७	,, विमलपारंगतायनम	शिखरजी
६	,, नमिनाथायनम	मिथिला
तिथि	॥ अपाढ़सुदी ॥	जन्मादिनगरी
६	श्री महावीरपरमेष्ठिनेनम	चत्रीकुण्ड

८ ,, नेमिपारगतायनम	गिरनार
१४ ,, वासुपूज्यपारगतायनम	चम्पापुर
तिथि ॥ श्रावणवदी ॥	जन्मादिनगरी
३ श्री श्रेयासपारगतायनम.	शिखरजी
७ ,, अनतपरमेष्ठिनेनम	अयोध्या
८ ,, नमिअर्हतेनम	मिथिला
६ ,, कुंथुपरमेष्ठिनेनम	हथणापुर
तिथि ॥ श्रावणसुदी ॥	जन्मादिनगरी
२ श्री सुमतिपरमेष्ठिनेनम	अयोध्या
५ ,, नेमिअर्हतेनम	सौरीपुर
६ ,, नेमिनाथायनम	द्वारिका
८ ,, पार्श्वपारगतायनम	शिखरजी
१५ ,, मुनिसुव्रतपरमेष्ठिनेनम	राजग्रही
तिथि ॥ भाद्रपदवदी ॥	जन्मादिनगरी
७ श्री चद्रप्रभपारगतायनम	

८ ,, सुपार्श्वपरमेष्टिनेनम' बाणारसी

तिथि ॥ भाद्रपदसुदी ॥ जन्मादिनगरी

६ श्री सुविधिपारंगतायनम शिखरजी

तिथि ॥ आश्विनवदी ॥ जन्मादिनगरी

१३ श्री महावीर गर्भापहारायनम. चत्रीकुंड

३० ,, नेमिसर्वज्ञायनम' गिरनार

तिथि ॥ आश्विनसुदी ॥ जन्मादिनगरी

१५ श्री सुविधिपरमेष्ठिनेनमः मिथिला

१ चवने परमेष्ठी हीरा हेम चढावे

२ जन्मनि अर्हते घृत गुड चढावे

३ दिक्षायाम् नाथाय वस्त्र चढावे

४ केवले सर्वज्ञाय स्वेतगोला चढावे

५ मोक्षेपारगताय गुड गोला लड्डू चढावे

॥ इति कल्याणक टीप ॥

॥ अथपचकल्याणकस्तवनलिख्यते ॥



देखीदेखीनूरकैंने समरासमरा स्वाम अन्तरह्यो
अन्तरनिरञ्जनभगवान जिनसेलगनलगी ॥ १ ॥
फलदाफलदाज्ञानहैरे किरियाक्रियाफोक मि-
थ्याज्ञानपरवतना कोडनपायासोक जि० ॥ २ ॥
फलदाकिरियामानलेरे ज्ञानेनसरैकाजरामा सम-
रणज्ञानथी कोणभयोसुखदाय जि० ॥ ३ ॥
रामासमरणज्ञानहैरे दाय शीलनेमाय दोयमि-
लेसेंसिद्धहैरे अंधपगु नोन्याय जि० ॥ ४ ॥
च्यवनरूपआदेक रीरे रूपातीतेवीर सेवुंनेतो-
तिहारहे हीरधर्मगणियुक्त जि० ॥५॥ इतिच्यवन
कल्याणकस्तवनम् ॥ १ ॥

मूरतश्रीवासुपूज्यनी साहिब जी देखी निरमल-
शांत हो मनलीनोचरणमें रमिरह्यो साहिब जी
थापनसें भावजिनतणी सा० समरी सारी रीति

हो० म ॥ १ ॥ जनम दिवसथीप्रभुतमें सा० अतिशय प्रगट्या छदहो म० गुरुलघुशंका असनमी सा० विधिनहो देवेमंदहो म० ॥२॥ सकल जगतमेतुमसमो सा० अवरनलाभेरूपहो म० रोगमलादिककुछनही सा० स्वेदहीनरोम कूप हो म० ॥ ३ ॥ आन प्राणनीवासना सा० तरजैसवसुगधहो म० मासरुधिरनीस्वेतता सा० पयसे थार्पेगधहो म० ॥४॥ इद्रादिकमहिमा करे सा० मेरुगिरेंनिजकामहो म० हीर धर्म केवोधकूं सा० जनम्योघनअभिरामहो म० ॥ ५ ॥ इति जन्मकल्याणक स्तवनम् ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

चरणरमाकरग्रहदिने सा० निरखीसंयम भूमिहो दिललागोजिणदर्नेंविवसें सा० वीजीअवस्था मुनिनमे सा० लीनभयोमनधूमहो दि० ॥ १ ॥ अशनदोइतग वसुमती सा० कीनीधृतसुखानाम हो दि० वसुवरसनसेजयत्रदं सा० लोकातिक

कमदलेगुणश्रेणिता म्हा० द० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर
पंचकालरहेतेयोगमें म्हा० र० तेरसप्रकृतिनोअंत
करीनेअंतमें म्हा० क० गमनकरेनगरजसेअक्रि
पहोयनें म्हा० सेअ० पुव्वपयोगअसगस्वभाव
अवधनें म्हा० स्वा० ॥ २ ॥ इगुगुणनवपरमाण
योजनलक्षकही म्हा० यो० वर्तुलविशदाभासनि
रालवनसही म्हा० नि० मध्येयोजनअष्टघना
कृतिअंतमें म्हा० घ० ॥ ३ ॥ मक्षीपचंथीहीन
भणी सिद्धांतमें म्हा० भ० तनुपभारानामशि-
लासंजोयणे म्हा० शि० युगलोचनमेंभागअलो-
कक्कु स्पर्शनें म्हा० अ० लघुअगुलबत्तीसप्रमाण
अवगाहना म्हा० प्र० वृद्धिधनु शतपंच गुणाशे-
हीनता म्हा० गु० ॥ ४ ॥ मिलिया एकमेंनंत
अवाधानालही म्हा० अ० अष्ट प्राणधरिरम्य
सिरीहीजोसही म्हा० सि० वीजोपदश्रीसिद्ध
धरोमनगेहमें म्हा० ध० कुशलभएजगजीवमिलो

गातेहमें म्हा० मि० ॥ ५ ॥ इतिमोच्चकल्याण कस्तवनम् ॥

॥ अथ पचकल्याणकस्तुति. ॥

च्यवित्वा यो मातुर्जठरउषित शिष्टजनन त्रयाद्योद्यतीर्थंकरविमलकर्मोदयवलात् अवधे र्ज्ञात्वाज्ञान त्रयसहित मस्तौरसुरपति र्व्रजन् सप्राप्टाग्रीनभिसपरमेष्ठी सुख्यतात् ॥ १ ॥ सुरेंद्रै र्भक्त्याय सुरगिरिशिलायाविरचितं श्रित स्नात्रंतीर्थाम्बुभिरतिशयैर्भातिसहजे सुखं यस्या प्यापूर्जन्मसमयेनारकसदः सव पयादर्हन्भव-दहनतापैकशमन, ॥२॥ सनाथो ऽव्याल्लोकांति-कविदितदिचावसर कोदद्दद्दत्ऽव्यवर्षसुरपकृतदि चोत्ववविधि शरान्लुंचन्मुष्टीन्ययइहचमनः पर्यय मियात् प्रमादस्पशोससमगुणखनीराग-रहत ॥ ३ ॥ गुणस्थानारोहक्रमविहितघाति-

च्यवणजेयुं तोरुद्रे दिव्येनिधिविधुमितरप्यऽतिश-
ये यदुद्योतद्भासानिचयइवतत्वप्रकटयन् विरे-
जेसर्वज्ञोऽवतुसुरनरेंद्रै नतपद' ॥ ४ ॥ सकृत्वा-
शैलेशीकरणघनतार्दान्भाटितिय सयोग्यतेऽयो-
गिन्यऽइउच्छ्लृतुल्येह्यत्रसितौ विधाय स्वामी-
क्षाप्रकृतिलयकर्मचयलिहाऽक्रियोऽगाह्लोकातेज-
गद्वतुपारगतविभु ॥ ५ ॥ परमेष्ठीतिच्य वने
जननेऽर्हन्दीक्षितेनाथ । ज्ञानेसर्वज्ञ इतिमोक्षे-
पारगत. सिद्ध ॥ ६ ॥

॥ इति कल्याणकस्तुति ॥

॥ अथ कल्याणक स्तुति लिख्यते ॥

नन्दिसर गिरवर कीजे स्नात्र उदार ।
भविजन शुभ भक्ते कीजे भाव उदार ॥
इन्द्रादिक देव अठाई महोछव साज ।
करीने निज थानिक पोहोता सुरवरराजे ॥ १ ॥
दिक्षा ने अवसर देइ अवधी ज्ञान ।

लोकान्तिक सुरवर समय चरण वखान ॥
प्रभु जी पिण जाणी देई सम्वच्छरी दान ।
विलसे पुन्य गहीऊ चारित्र गुणमणिवान ॥ २ ॥
शुभ केवल ग्याने लोकालोक प्रकाश ।
जिमसहस्र किरण गिर उदयाचलसुप्रकाश ॥
चौसठ इन्द्रे करी समव सरण विधिथाय ।
द्वादश परषदा करी रचना अनेक वणाय ॥ ३ ॥
गणधर पटधारी जयकारी संसार ।
सप्तभंगि त्रिभगी रचना अनेक बनाय ॥
भवियण पड़ी बोहण रूसय दूर हरत ।
बलिहारी थारा शासन जय जय वन्त ॥
॥ इति श्री थुई सम्पूर्णम् ॥

॥अथ ग्यारसनो २ ढालनी स्तवन लिः ॥

॥ दुहा ॥ स्वस्ति श्री मंगलकरण हरण ताप
जिनचंद वीरजिनदिनंदसम प्रणमुं धरि आनंद

॥१॥गौतम आदि गणधरा सुनकेवलि सुनिहाण त्रिकरण योग वदता पामे कोड़ कल्यान ॥ २ ॥ एकादशी तिथी वर्णवु शास्त्र तणे अनुसार विधि पूर्वक आराधता पामे पद निर्वाण ॥ ३ ॥ [ढाल पहली] पणिआरीनो ॥ देशी ॥ नेमि जिनेसर उपदिशे। सुखकारिरे। लोय साभले कृष्न राजान। वालाछो। द्वारिका नगरी समवसरया ॥सु०॥ रेवताचल उद्यान ॥ वा० ॥ पर्वाराधन फल कह्यो ॥ सु० ॥ साभले परपदा बार ॥ वा० ॥ पर्युपण चउमासा भला ॥सु०॥ नवपद ओली सार ॥ वा० ॥ ५ ॥ पचमी बीज आठम कही ॥ सु० ॥ जिन कल्याणक जाण ॥ वा० ॥ एकादशी इम जाणिये ॥ सु० ॥ पर्वाधिक मन आण ॥ वा० ॥ ६ ॥ मगसिर सुदि एकादशी ॥ सु० ॥ पर्वमाहि श्रीकार ॥ वा० ॥ अरनाथ दीचा मही ॥सु०॥ पाम्या भवनोपार ॥वा०॥७॥

मल्लि जन्म संजम लियो ॥सु०॥ पाम्यो केवल ज्ञान ॥ वा० ॥ नमिनाथने ऊपनो ॥ सु० ॥ केवल ज्ञान प्रधान ॥ वा० ॥८॥ पाच कल्याणक अति भला ॥ सु० ॥ थया इण भरत मझार ॥ वा० ॥ निमहिज एवत खेत्रमा ॥ सु० ॥ भाखे जगदाधार ॥ वा० ॥ ६ ॥ पाच भरत ऐर वतवलि ॥ सु० ॥ पाच कल्याणक जाण ॥वा०॥ दशखेत्रना इम जाणिये ॥ सु० ॥ पाचकल्याणक जाण ॥ वा० ॥१०॥ तिन काल गिनता थका ॥ सु० ॥ डेढसे कल्याणक थाय ॥ वा० ॥ तिथीमांहि सिरोमणि ॥ सु० ॥ इग्यारस सुख-दाय ॥ वा० ॥ ११ ॥ अनतकल्याणक इण परे ॥ सु० ॥ अनत चोवीसी जाय ॥वा०॥ मौनकरी आराधिये ॥ सु० ॥ एहथी शिवसुख होय वाला ॥ १२ ॥ चोविहार उपवासथी ॥ सु० ॥ पोसह करिने सार ॥ वा० ॥ सुगुरु चरण सेविकरी

॥ सु० ॥ काउसग्ग दिलधार ॥ चा० ॥ १३ ॥
मौनकरी मल्लिनाथजी ॥ सु० ॥ एक दिवस
सुखकार ॥ चा० ॥ मौन प्रथा इण परि थइ
॥ सु० ॥ पाम्यो केवल श्रीकार ॥ चा० ॥ १४ ॥
[ढाल बीजी] माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालने
ए देशी ॥ सुखकर देवनिरंजन नेमजिणंद इम
उपदिसे ॥ ए आंकणी ॥ भविजन भाव धरिने
सांभले श्री जिनवाण । अमीरस वयण श्रवण-
अंजलीभरपीवता । एतो जाये भव भव निर्मित
कर्म निवारण ॥ सुख० ॥ १५ ॥ भवियण अंग
इग्यारे आराधवा तप विधिए रही ।जेहथी पामे
अनुपम महिमा अतुल अपार । वरस इग्यारने
मास एकादश तप करो । सपूरण तप हुआ होवे
मंगलकार ॥ सु० १६ ॥ भ० ॥ अंग इग्यार
लिखावे सुवरण अक्षर ।. पुस्तक पूठा ठवणी
नवकर वाली सार, कवली झिलमिल पाटीने

वली पाटली । वीटणा मखमल रेसम चरतणा मनुहार ॥ सु० ॥१७॥ डोरालेखण भावी वास-कुंपा वली कोथली वटवा मिजासणाने चंद्रवा अधिकार। पुठोया चोपड रुमाल नाना भातिना। पाटा पाटलाने त्रिगड़ा रचे सखकार ॥ सु० ॥ ॥१८॥भ०॥ केसर सूखड़ खसकूचोने वाडथी। प्यालाने कलसा अगलूहणा ढिलधार। चामर छत्र त्रयने आभूषण रत्ने जड्या। रचिय वास खेपादि पुजा विविधि प्रकार ॥ सु० ॥ १६ ॥भ० देवपूजा तिम गुरुपूजा विधि आदरो। करिये साहमी वछल धरिये भावविसाल। रात्रिजागो करिजिनगुणगावे प्रीतसूं अधिको धनखरचीने लहिये रंगरसाल ॥ सु० ॥ २० ॥ भ० ॥ इग्या-रसनो तपसेवो भवियण भावसूं सुव्रत सेठे-कीधो पोषधथी चितलाय चोर अग्निना उपद्रवथी ते उगर्यो। एतिथी सेव्या शिवमारग

सुखे जवाया ॥ सु० ॥ २१ ॥ कलश ॥ इम नेमिजिनवरश्यामसुखकर सिवा देवी नदनो। एकादशी तप फल प्रकाश्यो भविकजन आनदनो सर, नय, निधी भुविक्रमवरसेपोपवदि एकादशो। जिन कृपाचद्र सूरि पभणेँ सुगुरु सेवो उल्लसी ॥सु०॥२२॥ इति ग्यारसवृद्ध स्तवनम् ॥

देशावगासी पारनेकी गाथा।

जेमे जाण तिजिणा अवराहा जेसुर ठाणेसु ते सव्व आलोएमो अभ्भुठिओ सव्व भावेण दश मनका दश वचनका बारे कायाका बत्तीस दूषणमें जो काई दूषण लागो होय तेसहू मन वचन काया करी मिच्छामि दुक्कड ॥ १ ॥



अथ लघु अष्ट प्रकारी पूजा लिख्यते (१)



विमलकेवलभासनभास्करं। जगत जंतु-महोदयकारणं। जिनवर बहुमानजलौघत। शुचिमन. स्नपयामि विशुद्धये॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय। श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥

अन्वय—अहम् शुचिमन. सन् विमलकेवलभासनभास्कर। जगतजन्तुमहोदयकारणम्, जिनवरं बहुमानजलौघत. विशुद्धये स्नपयामि।

भावार्थ।

मैं शुचि मनसे निर्मल केवल ज्ञान रूपी प्रकाशके प्रकाशक तथा ससारी जीवोंके महोदयके कारण जिनेन्द्र भगवानको बहुत आदरके

साथ जलोसे अपनी आत्म शुद्धीके लिये स्नान कराता हू ।

भावार्थ ।

हे भगवन् ! आप परम पवित्र हैं अर्थात् ससारिक अपवित्र पदार्थों से रहित हैं और आप केवल ज्ञानरूपी, परमतेज करके सूर्यके सदृश प्रकाशमान हैं अर्थात् अज्ञानरूपी अन्धकारसे रहित हैं एव ससारके जीवोंके आदि कारण हैं व समस्त प्राणियोंके आनन्द दायक हैं ऐसे आपको मैं शुद्धमन होकर राग-द्वेष छोड़ बहुमान पूर्वक जलो से स्नान कराता हूं और मैं यह चाहता हूं कि आप भी ज्ञानरूपी जलसे मेरे अन्त करण को शुद्ध कर दें ॥ १ ॥

॥ अथ चदनपूजा (२) ॥

सकलमोहतिमिरविनाशन । परमशीतल

भावयुतं जिनं ॥ विनयकुंकुम दर्शनचन्दनैः। सहजतत्वविकाशकृतेर्च्चये ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति ॥

अन्वय।

अहम् सहजतत्वविकाशकृते, सकलमोहतिमिरविनाशन परमशीतल भावयुतं जिनं विनय कुंकुमदर्शनचन्दनै अर्चये।

भावार्थ।

मैं परमतत्व प्रकाशके लिये सम्पूर्ण मोह (अज्ञान) रूपी अंधकार के दूर करनेवाले एव परमशान्त स्वभावसे युक्त जिनेन्द्र भगवानको विनयरूपी कुंकुम और दर्शनरूपी चन्दनोंसे पूजा करता हूं।

भावार्थ।

हे वीतराग। आप समस्त मोहरूपी अन्धकारको नाश करनेवाले हैं और आप परम

॥ अथ धूपपूजा (४)

सकलकर्म्ममहेंधनदाहन । विमलसम्वर भावसुधूपन ॥ अशुभपुद्गलसगविवर्जितं । जिनपते पुरतोस्तु सुहर्पितं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूप यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥

अन्वय ।

इदम् अशुभपुद्गलसगविवर्जितम् सकलकर्म महेंधनदाहन, विमलसम्वर भावसुधूपनम् जिनपते (भगवतो जिनस्य) पुरतः सुहर्पितः (सुहर्षेण मयार्पितम्) अस्तु ।

भावार्थ ।

यह अपवित्र वस्तुओके सम्पर्कसे रहित तथा समस्त कर्मरूपी विशाल काष्ठ को जलानेवाला हर्पके साथ मेरे द्वारा दिया हुआ शुद्ध सम्वर भावरूप जो सुन्दर धूप वह जिनेन्द्र भगवानके आगे मै खेता हू ।

भावार्थ ।

हे वीतराग ! आप समस्त अष्टकर्मरूपी विशाल काष्टोको जलानेवाले हैं क्योंकि जब तक कर्म नाश नहीं होते तबतक मोक्ष होना दुर्लभ है अत आप उनको नाशकर मोक्षके दाता हैं फिर भी आप अशुभ शरीरके जो पुद्गल उससे पृथक् हैं अर्थात् आपमें कोई भी अशुभ पदार्थ व्याप्त नहीं है हे नाथ। ऐसे आपके सामने शुद्ध सम्वर भावरूप धूपको हर्षित होकर खेता हूं ॥ ४ ॥

॥ अथ दीपकपूजा (५)

भविकनिर्म्मलबोधविकासक । जिनगृहे शुभदीपकदीपनं ॥ सुगुणरागविशुद्धसमन्वितं । दधतु भावविकासकृतेजना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥

अन्वय ।

जना॰ (भक्तजना) भविकनिर्मलबोधविकाशक सुगुणरागविशुद्धसमन्वितम् शुभदीपकदीपनम् भावविकाशकृते जिनगृहे दधतु ।

भावार्थ ।

भक्तजन मगल तथा निर्मल ज्ञानके प्रकाशक, सुन्दर गुण एव सच्चे प्रेमसे युक्त सुन्दर दीपकका प्रकाश अपने हृदयभावके विकाशके लिये जिनेन्द्र भगवानके मन्दिरमें (जोवें) चढ़ावें।

भावार्थ ।

हे भगवन्! आप मगलमय हो अमगल पदार्थो से रहित हैं एव निर्मल अर्थात् ससारके विषयोसे रहित जो ज्ञानकी बुद्धि उसके प्रकाशक हैं एवं सुन्दरगुण जो भी है उनसे युक्त होऔर सच्चे प्रेमसे युक्त है। ऐसे आपके सामने ससारिक पदार्थों का दर्शक जो दीपक उसको

आपके सम्मुख चढ़ाता हूं आप भी कृपाकर मेरे अज्ञानावृत हृदयमें ज्ञानरूपी दीपक प्रकाश कर दीजिये ॥ ५ ॥

अथ अक्षत पूजा (६)

सकलमंगलकेलिनिकेतनं । परममङ्गल भावमय जिनं ॥ श्रयत भव्यजना इति दर्शयन् । दधतु नाथपुरोक्षतस्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥६॥ इति ॥

अन्वय ।

सकलमंगलकेलिनिकेतन परममगल भावमय जिन यूय श्रयत इति दर्शयन् भोभव्यजना हे नाथ (तव) पुर. अक्षत स्वस्तिकम् दधतु ।

भावार्थ ।

सम्पूर्ण मंगलोंके विहार स्थान तथा परम मंगल भावमय जिनेन्द्र भगवानको सब लोग

आश्रय करते हैं यह दिखलाते हुए भव्यजन हे नाथ आपके आगे कल्याणकारक अक्षत चढ़ावें।

भावार्थ।

हे परमात्मन्! आप समस्त मंगलों के क्रीड़ा मन्दिर हैं अर्थात् सभी मंगल आपमें विराजमान हैं और आप परममंगल भावमय हैं अर्थात् कैवल्य स्वरूप हैं फिर भी सुजनोंके आश्रय हैं अत यह जो अक्षत उसके निवेदन से अक्षत् अर्थात् नाश रहित जो स्थान अर्थात् मोक्ष है वह मैं आपसे याचना करता हूं॥ ६॥

अथ नैवेद्य पूजा (७)

सकल पुद्गलसंगविवर्जनं। सहजचेतनभाव विलासकं॥ सरसभोजननव्यनिवेदनात्। परम निर्वृतिभावमहं स्पृहे ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० नैवेद्यं यजामहे स्वाहा॥ ७॥ इति॥

अन्वय ।

हे नाथ सकलपुद्गलसंगविवर्जितं सहजचेतनभावविलासक सरसभोजननव्यनिवेदनात् अहम् परम निर्वृतिभावं स्पृहे ।

भावार्थ ।

हे भगवन सम्पूर्ण अपवित्र जड़ पदार्थों से रहित और स्वाभाविक चेतनभावको देनेवाले नवीन तथा सरस भोजन (आपको) निवेदन करनेसे मैं परम निर्वृत्तिभाव (मोक्ष) को प्राप्त करना चाहता हूं ।

हे भगवन्। आप समस्त जड़ पदार्थों करके रहित हो अर्थात् चेतन स्वरूप हो और स्वाभाविक चित्तके आनन्द दायक हो काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, इत्यादि से रहित हो ऐसे परम पुनीत जो आप उनको सरस एवं नवीन नैवेद्य को निवेदन कर उसके प्रत्युपकार

में मोक्ष फल को मांगता हूं ॥ ७ ॥

अथ फलपूजा (८)

कटुककर्मविपाकविनाशन । सरसपक्कफल व्रजढोकन ॥ वहति मोक्षफलस्य प्रभो पुरः । कुरुत सिद्धिफलाय महाजना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० फल यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥ इति ॥

अन्वय ।

भो महाजना युयम् विहितमोक्षफलस्यप्रभो पुर सिद्धिफलाय कटुककर्मविपाकविनाशन सरसपक्कफलव्रजढोकन कुरुत ।

भावार्थ ।

हे सज्जनवृन्द आप उत्तम मोक्षफलके प्रभु (मोक्षके देनेवाले) जिनेन्द्र भगवानके आगे सिद्धि फल प्राप्त करनेके निमित्त कडुवे कर्मके परिणाम फलको नाश करनेवाले सरस तथा पके फलोको चढ़ाइये ।

भावार्थ ।

हे वीतराग । कड़वे जो अष्टकर्मके परिणाम रूपी फल अर्थात् अन्तमे दुःखदायी ऐसे कर्म-फलको नाश करनेवाले और सरस तथा पके फलको चढ़ाकर एवं केवल फलसे अर्थात् मोक्ष फलदायक ऐसे परम प्रभु जिनेन्द्रभगवानको हे सज्जनो सिद्धि फल प्राप्त करनेके लिये यह-फल चढ़ावें ॥ ८ ॥

अथ अर्घपूजा (९)

इति जिनवरवृंद भक्तित पूजयंति-। सकलगुणनिधान देवचन्द्र स्तुवति । प्रतिदिवसमनंत तत्त्वमुद्भासयति । परमसहजरूप मोक्षसौख्यं श्रयति ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अर्घं यजामहे स्वाहा । ॥ इति ॥

अन्वय ।

इति (एवं ये (जना.) . सकलगुणनिधान

देवचन्द्र जिनवरवृ दं भक्तित पूजयन्ति तथाच स्तुवंति एव प्रतिदिवस अनन्त तत्वं उद्भासयन्ति ते परमसहजरूप मोक्षसौख्य श्रयन्ति ।

भाषार्थ।

इस (पूर्वोक्त) प्रकारसे जो मनुष्य समस्त गुणोंके निधान देवचन्द्रजी उनकी तरह आनन्ददायक एव श्रेष्ठ जिनेन्द्रकी पूजन और स्तुति करते हैं तथा प्रतिदिन अनन्त परम तत्त्वको मनन (विचार) करते हैं वे मोक्षरूपी परम सुखको सहजमें ही प्राप्त कर लेते हैं।

भावार्थ।

पूर्व कहे हुए ज्ञानके सागर जो जिनेन्द्रभगवानकी यह स्तुति उसका जो सज्जन कविदेवचन्द्रजीकी तरह भगवान जिनेन्द्रदेवके सामने पाठ करते हैं या इससे उनका पूजन करते हैं वह

प्रतिदिन परमतत्त्व को प्रकाश प्राप्तकर मोच सुखको प्राप्त करते हैं ॥ इति ॥

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ १ ॥

शक्रोयथाजिनपते सुरशैलचूला। सिंहासनो परिमितिस्नपनावसाने। दध्यच्चतै कुसुमचन्दन गधधूपैः। छत्वार्च्चनं तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥१॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एव विधिना लंकारवस्त्रा- दिक। पूजां तीर्थकृतां करोति सतत शक्त्याति भक्त्यादृतः। नीरागस्य निरजनस्य विजिता राते त्रिलोकीपते स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृति कृते क्लेशचयाकाचया ॥ ॐ ह्रीं० वस्त्र० इति वस्त्र पूजा ॥ इति अष्टप्रकारीपूजा ॥ १० ॥

अन्वय।

तद्वत् एव. श्रावकवर्ग सततं शक्त्याति भ- क्त्यादृत नीरागस्य निरंजनस्य विजिताराते. त्रि- लोकीपतेः तीर्थकृता पूजां स्वस्य अन्यस्य च जन-

स्य निर्वृ ति कृते क्लेशनयाकांक्षया (च) करोति।

भावार्थ।

जिस प्रकार इन्द्रने सुमेरु पर्वतके शिखरके ऊपर आसन पर स्थित जिनेन्द्रभगवानके स्नान करानेके पश्चात दधि अक्षत गधादिके द्वारा पूजन करके पीछे वस्त्रसे पूजा की थी उसी प्रकार यह श्रावकवर्ग सदा अपनी शक्ति भक्ति एवं आदरके साथ वीतराग निरंजन तथा अजातशत्रु त्रिलोकके स्वामी जिनेन्द्र भगवानको पूजा अपनी तथा अन्यान्य मनुष्योंको मुक्ति एवं क्लेशक्षयकी कामनासे करें ॥ इति ॥

कविवर देवचन्द कृत जिनदेव पूजन
सटीक समाप्त।

सूर्य्यमल यति।
कलकत्ता।

॥ गजल ॥

चाहे तारो या न तारो सरना तो ले चुका हूं ।
जिंदगीसे अब में हारा, जब तुमको जा पुकारा,
अरजी तो दे चुका हूं ॥ चाहे ॥ १ ॥
पांचों इंद्रिया सतावे, मन मैल को बढ़ावे,
भव जल में यों डुबा हूं ॥ चाहे० ॥ २ ॥
क्या हाल कहुं में सारा, दिल में जो है हमारा,
सेवक तो हो चुका हूं ॥ चाहे० ॥३॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

अरजी तो कर रहा हूं चाहे मानो या न मानो ।
प्रभु नाभिजी के नंदा, आदि जिनंद चंदा ।
चरनो में आ पड़ा हूं ॥ चा० ॥ १ ॥
तुम ध्येय मै हुं ध्याता,तुम्हें ध्यानमें ही गाता,
प्रभू सामने खड़ा हूं ॥ चा० ॥ २ ॥
तुम रागके हो वामी, प्रभु में हुं राग कामी,

तुम राग में लगा हूं ॥ चा० ॥ ३ ॥
तारक तारो मोहे, तारक नाम सोहे,
गुन तुमगही गा रहा हूं ॥चा०॥ ४ ॥
दर्शन से दुरित जावे, वञ्छित फल पावे,
चित ये ही चाह रहा हूं ॥चा०॥ ५ ॥
नगर बड़ोदा मंडन, करो स्वामी अघ खंडन,
तुम शरन आ रहा हूं ॥ चा० ॥ ६ ॥
आतम लक्ष्मि स्वामी, प्रभु हर्षे भूरि पामी,
वल्लभ तो गा रहा हूं ॥ चा० ॥ ७ ॥इति॥

॥ देशी की चाल ॥

'सखि समवसरण महाराज आज पावापुर 'आयोरी ॥ टेक ॥ 'दरशन करे पाप मल नासे, मानुष जन्म सुफल हो जासे, सिंहासन पर सोहे खासे,'श्रीजिन 'रायोरी ॥ सखि० ॥ १ ॥
खट ऋतुके जेह 'फूल अनावे, बाघ मृग बैठे 'एक होके, साप नवल मिल बैठे 'चाले,'घेर

नसायोरी ॥ सखि० ॥ २ ॥ तरु अशोक लख शोक विनासे, भा मंडल में भाव विकासे, सात सात भव ज्ञान प्रकासे, वचन सुधारोरी ॥सखि ॥ ३ ॥ चोसठ चमर ढुले सिरजांके, तीन छत्र तिहुं जग प्रभूताके, गणधर रहे कीर्ति यश गाके, हरष वढ़ायोरी ॥ सखि० ॥ ४ ॥ त्रिगड़े में जिनराज विराजे, वानी सिंहनाद ज्यो गाजे, चहुं ओर अमर दुदभि वाजे, आनंद छायोरी ॥ ५ ॥ इति ॥

